International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

विश्व परिवेश में पर्यावरण की राजनीति एवं भारतः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

Dr. Braham Parkash
Associate Professor
Deptt. of Political Science
C.R. Kisan College, Jind (HR.)

शोध आलेख सारः आज समस्त विश्व में पर्यावरण का मुद्दा वाद–विवाद का विषय बना हुआ है। चूंकि 1970 के दशक में विश्व के बुद्धिजीवी इस बात से परिचित हो चुके थे कि आने वाले समय में पर्यावरण प्रदूषण का संकट एक महामारी का रूप लेने वाला है। अंततः उनकी चिंता सार्थक सिद्ध हुई और आज विकासशील देशों के साथ–साथ विकसित देशों में भी एक राजनैतिक मुद्दे के रूप में पर्यावरण सम्बन्धी विषयों पर व्यापक चर्चा की जाती है। विश्व स्तर पर संयुक्त राष्ट्र के तत्वाधान में 1972 में स्वीडन की राजधानी स्टॉकहोम में एक अंतराष्ट्रीय सम्मेलन हुआ था। उसके बाद तो कई सम्मेलन हुए और इन सम्मेलनों की राजनीति में पर्यावरण संरक्षण के उपायों पर व्यापक चर्चा हुई। इस दृष्टि से 1992 में ब्राजील की राजधानी रियो–डी–जेनेरो में प्रथम पृथ्वी सम्मेलन महत्वपूर्ण माना जाता है। इसी स्थल पर 2012 में रियो+20 सम्मेलन हुआ जो 21वीं सदी का एक महत्वपूर्ण राजनैतिक सम्मेलन है। 2015 में भी पेरिस जलवायु सम्मेलन पर्यावरण संरक्षण की राजनीति पर ही दृष्टिपात करता है। प्रस्तुत शोध पत्र विश्व स्तर पर पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अब तक हुए प्रयासों व इसमें भारत की चिन्ता को उजागर करता है।

मूलशब्दः पर्यावरण प्रदूषण, पर्यावरण की राजनीति, स्टॉकहोम सम्मेलन, पृथ्वी सम्मेलन, रियो+20, पेरिस जलवायु सम्मेलन।

भूमिकाः पर्यावरण की राजनीति की उत्पति 1970 के दशक में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्टॉकहोम सम्मेलन से मानी जाती है। पर्यावरण के मुद्दे को लेकर विश्व के राजनेताओं तथा बुद्धिजीवियों ने विभिन्न सम्मेलनों में जो चिन्ताऐं व्यक्त की हैं, उन सभी का सम्बन्ध पर्यावरण की राजनीति से है। आज मानव जाति को जिन समस्याओं से जूझना पड़ रहा है, उनमें पर्यावरण की समस्या सबसे प्रमुख है। वर्तमान समय में

मानव जाति को इस दानव से ही सबसे ज्यादा खतरा है। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान अमेरिका द्वारा जापान के दो शहरों, हिरोशिमा तथा नागासाकी पर की गई बम्बबारी से जो पर्यावरण की क्षति हुई थी, वह आने वाले भयंकर खतरे का अहसास थी। 1960 के दशक में यूरोपीय देशों में तेजी से बढते हुए औद्योगिकीकरण तथा शहरीकरण की प्रक्रिया ने पर्यावरण प्रदूषण की समस्या को जन्म देकर मानव जाति के लिए खतरे की घंटी बजा दी थी। इसके साथ–साथ कृषि क्षेत्र में बढ़ते कीटनाशकों के प्रयोग से भी प्रदूषण की समस्या में काफी ईजाफा हुआ। पिछड़े तथा विकासशील देशों के सामने प्राकृतिक संसाधनों के दोहन पर ही मानव अवश्यकताओं को पूरा करना तथा आवश्यक पूंजी प्राप्त करने के लिए इन साधनों का निरन्तर अन्धाधुन्ध प्रयोग एक चुनौती बनकर उभरा है। यही कारण है कि आज भारत जैसे विकासशील देश में पर्यावरण प्रदूषण को लेकर विपक्षी दलों तक राजनीति करते हैं और दिल्ली जैसे शहर में धरना प्रदर्शन किए जाते हैं। अब तक भारत सरकार द्वारा इस दिशा में किए गए सार्थक प्रयास असफल रहे हैं और दिल्ली विश्व के सर्वाधिक प्रदूषित शहरों में शुमार हो चुका है।

1970 के दशक में विश्व के अन्दर कई तेलवाहक टैंकर दुर्घटनाग्रस्त हुए और उनसे समुन्द्र का पर्यावरण बिगड़ गया। इसको लेकर विश्व स्तर पर व्यापक चिन्ता व्यक्त की गई। 1972 में स्वीड़न की राजधानी स्टॉकहोम में संयुक्त राष्ट्र के तत्वाधान में विश्व का प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण शिखर सम्मेलन हुआ। इसमें भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी ने पर्यावरण संरक्षण के मुद्दे को प्राथमिकता से समझते हुए अपना भाषण दिया। श्रीमती इन्दिरा गांधी ने विश्व के नेताओं का ध्यान इस बात की तरफ आकर्षित किया कि पर्यावरण संकट के लिए विकसित देश कम जिम्मेवार नहीं हैं। पूंजीवादी देशों की जीवनशैली तथा कार्यपद्धति के कारण पर्यावरण प्रदूषण की समस्या गहन होती जा रही है। अतः विकसित देशों को पर्यावरण संरक्षण की दिशा में ठोस कदम उठाने की अपेक्षा सभी देश करते हैं। इस दौरान ओजोन

परत के क्षरण पर भी चर्चा की गई और परमाणु अस्त्र–शस्त्रों के दुष्परिणामों पर भी व्यापक विचार–विमर्श हुआ।

1972 के स्टॉकहोम सम्मेलन में लगभग 100 ऐसे उपायों पर चर्चा की गई जो पर्यावरण की गुणवता को सुधारकर प्राकृतिक संसाधनों के प्रबन्धन की दिशा में पर्यावरण शिक्षा द्वारा वृद्धि करने की दृष्टि से उपयोगी माने गए। इस दिशा में विकसित तथा विकासशील देशों ने सांझा रणनीति पर कार्य करने पर विचार किया। इस सम्मेलन में आने वाले समय में अफ्रीका जैसे देशों में पर्यावरण सुरक्षा सम्बन्धी ऐजेन्सी खोलने पर सहमति हुई। इस सम्मेलन ने 26 सिद्धान्तों की एक सूची जारी की जो वैश्विक स्तर पर पर्यावरण सुरक्षा की प्रतिबद्धता को व्यक्त करती है। इस तरह स्टॉकहोम सम्मेलन विश्व पर्यावरण सुरक्षा की दिशा में प्रथम कारगर कदम माना जाता है, जिसने पर्यावरण की राजनीति की नींव रखकर आने वाले वर्षों में बुद्धिजीवियों तथा नीति निर्माताओं के सामने एक चर्चा का मुद्दा बना दिया।

स्टॉकहोम सम्मेलन के 10 वर्ष बाद विश्व के प्रमुख देश वैश्विक पर्यावरण पर चर्चा हेतु 1982 में कीनिया की राजधानी नैरोबी में पुनः एकत्रित हुए। इस दौरान विकासशील देशों ने पर्यावरण सुरक्षा के प्रति अधिक रूचि दिखाई। इस सम्मेलन में बढते मरूस्थलीकरण, भूमि कटाव, अवनीकरण, हिमखण्डों का घटन आदि का कारण जलवायु परिवर्तन को बताया। दूसरी तरफ संयुक्त राष्ट्र के अधीन विकसित देशों ने भी पर्यावरण संरक्षण के उपायों पर व्यापक चर्चा की। इस तरह पर्यावरण सुरक्षा की दृष्टि से इस दौरान भी व्यापक विचार–विमर्श हुआ।

1992 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा आयोजित तीसरे पर्यावरण सम्मेलन में भी पर्यावरण का मुद्दा बड़े जोश के साथ चर्चा का विषय बना। यह सम्मेलन ब्राजील की राजधानी रियो–डी–जेनेरो में हुआ। इस सम्मेलन में लगभग 10 हजार पर्यावरण विद्वान, 8 हजार पत्रकार, तथा बड़ी संख्या में विश्व के नेताओं ने भाग लिया। इसमें अमीर तथा गरीब देशों के बीच में आर्थिक असंतुलन के कारणों पर प्रकाश डाला गया। इसके दौरान 150 देशों ने दो संधियों पर हस्ताक्षर किए। प्रथम सन्धि का

उद्देश्य धरती पर बढ़ती गर्मी को रोकना तथा ग्रीन हाऊस गैसों के प्रभाव को कम करना था ताकि कार्बन उत्सर्जन की मात्रा 1990 के स्तर पर लाई जा सके। दूसरी सन्धि जैव विविधता से सम्बन्धित थी जो पौधों तथा जीव जन्तुओं की सुरक्षा को लेकर निर्मित हुई थी। यद्यपि अमेरिका ने इन पर्यावरण संरक्षण के उपायों का विरोध किया था। उनका मानना था कि धीमा आर्थिक विकास और बड़ी मात्रा में राजस्व घाटे को यह सन्धियां जन्म देने वाली हैं। इस सम्मेलन में सतत विकास पर चर्चा हुई और विश्व के गरीब देशों को ही पर्यावरण ह्रास का कारण विकसित देशों द्वारा माना गया। फिर भी इस सम्मेलन में सतत् विकास आयोग की स्थापना पर सहमति हुई। लगभग 800 पृष्ठों वाले प्रलेख में ऐजेंडा 21 इस सम्मेलन की महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जाती है।

1997 में जापान के क्योटा शहर में पर्यावरण सम्मेलन हुआ। इस प्रयास को क्योटा प्रोटोकॉल के नाम से जाना जाता है। इस प्रयास में सभी राष्ट्रों ने पर्यावरण परिवर्तन के उत्तरदायी कारण तथा गैस उत्सर्जन पर चर्चा की। अमेरिका में क्लिंटन प्रशासन ने इसे स्वीकार कर लिया परन्तु बाद में बुश प्रशासन ने इसे अस्वीकार कर दिया। इसका प्रमुख कारण यह था कि अमेरिका ग्रीन हाऊस गैसों का सबसे बड़ा उत्पादक देश है और वह ऐसी कोई भी वचनबद्धता में भागीदार नहीं हो सकता जो उसके हितों को हानि पहुंचाती हो। इसके बावजूद यह सम्मेलन पर्यावरण की राजनीति का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है।

2002 में दक्षिणी अफ्रीका के शहर जोहान्सबर्ग में संयुक्त राष्ट्र के तत्वाधान में विश्वस्तर का सम्मेलन हुआ जो पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण कदम माना जाता है। इस सम्मेलन में विश्व के लगभग 100 देश शामिल हुए। यद्यपि अमेरिका ने इस सम्मेलन में भाग नहीं लिया, फिर भी इस सम्मेलन में शामिल देशों ने कई वचनबद्धताऐं ग्रहण की ताकि सतत् विकास की अवधारणा को अब अमलीजामा पहनाया जा सके। इसमें पर्यावरण संरक्षण को लेकर एक कार्य योजना को लागू करने पर भी सहमति की गई तथा 2010 तक जैव विविधता के नुकसान की भरपाई करने

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

पर सहमति हुई। इसके साथ–साथ सभी देशों द्वारा ऊर्जा के नवीनीकरण साधनों के प्रयोग को प्राथमिकता से लागू करने पर भी सहमति हो गई।

वर्ष 2012 में 13 से 22 जून तक संयुक्त राष्ट्र के तत्वाधान में सतत् विकास को लेकर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन ब्राजील की राजधानी रियो–डि–जेनेरो में हुआ। इस सम्मेलन को रियो +20 के नाम से जाना जाता है। यह सम्मेलन 20 वर्ष बाद उसी स्थान पर हुआ, जहाँ प्रथम पृथ्वी सम्मेलन हुआ था। इस सम्मेलन के अंत में इसको ''जीम थ्नजनतम ूम ूंदजश शीर्षक दिया गया। इसमें संयुक्त राष्ट्र संघ के 191 सदस्य देश शामिल हुए तथा 79 देशों के संवैधानिक पदों पर विराजमान नेताओं ने भाग लिया। कुल मिलाकर सम्मेलन के वाद विवाद में पर्यावरण संरक्षण को लेकर गहन चर्चा की गई। लगभग 44 हजार लोगों ने इस सम्मेलन की बैठक में भाग लिया। संयुक्त राष्ट्र की महासभा ने पर्यावरण सुरक्षा की दृष्टि से सभी देशों को ऐसे उपाय करने पर अमल करने को कहा ताकि सतत् विकास की प्रक्रिया को आगे बढाया जा सके।

2015 में पेरिस जलवायु समझौते के तहत पर्यावरण के मुद्दे पर विश्व के कई देशों ने अपनी–अपनी चिन्ता व्यक्त की। इसमें विकसित बनाम विकासशील देशों की चिन्ताऐं पूर्ववर्ती रूप में उजागर हुई। आज भी विकासशील देशों को ही पर्यावरण विनाश का प्रमुख उत्तरदायी माना जाता है। वास्तव में विकसित देशों द्वारा अपनाई गई जीवनशैली भी इसके लिए कम उत्तरदायी नहीं है।

यदि भारत ेके सन्दर्भ में पर्यावरण संरक्षण की बात की जाये तो जून 2008 में भारत ने एक राष्ट्रीय मिशन योजना के तहत एक राष्ट्रव्यापी अभियान शुरू किया है। इसमें राष्ट्रीय सौर मिशन, बढ़ी ऊर्जा दक्षता पर राष्ट्रीय मिशन, सतत् मौजूदगी पर राष्ट्रीय मिशन, राष्ट्रीय जल मिशन, हिमालयी पारिस्थितिकी को बरकरार रखने के लिए मिशन, ग्रीन इंडिया के लिए राष्ट्रीय मिशन, कृषि के लिए राष्ट्रीय मिशन, तथा जलवायु परिवर्तन के लिए नये रणनीतिक ज्ञान पर राष्ट्रीय मिशन शामिल हैं। वस्तुतः 2009 में भारत ग्रीन हाऊस गैसों का उत्सर्जन करने वाला विश्व का तीसरा देश बन गया है। प्रथम और दूसरा स्थान अमेरिका और चीन का है। वैश्विक समुदाय द्वारा भी

इस बात की चिन्ता उजागर की गई है कि विकासशील देश धीरे–धीरे ग्रीन हाऊस गैसों का प्रभाव बढाने की दिशा में विकसित देशों के समान आगे बढ रहे हैं जो आने वाले भयंकर खतरे का अहसास है। इसके बावजूद भारत में पर्यावरण सम्बन्धी कई कानून बनाए गए हैं और राष्ट्रीय ग्रीन ट्रिब्यूनल की स्थापना की गई है ताकि देश में पर्यावरण सुरक्षा के मानकों को लेकर ठोस उपाय किये जा सकें।

सारांशः अतः पर्यावरण राजनीति के सन्दर्भ में आज विश्व के समस्त देश इस बात से चिन्तित हैं कि प्रतिदिन धरती का तापमान बढ रहा है और भूमिगत जल संसाधन तथा प्राकृतिक संसाधन खतरे का सामना कर रहे हैं। ओजोन परत का क्षरण तेजी से हो रहा है। 1972 के स्टॉक होम सम्मेलन में भाग लेकर भारत ने अपनी चिन्ता व्यक्त कर दी थी कि वह पर्यावरण सुरक्षा को लेकर कोई भी कोताही नहीं बरतेगा। फिर भी बढते शहरीकरण तथा औद्योगिकीकरण के प्रभाव से भारत भी अछूता नहीं रहा है। यद्यपि भारत पर्यावरण संरक्षण को लेकर होने वाले हर सम्मेलन में भागीदार रहा है, फिर भी आज भारत के सामने पर्यावरण क्षरण की समस्या को लेकर कम चिन्ताऐं नहीं हैं। दिल्ली जैसे शहर पर्यावरण प्रदूषण के खतरनाक स्तर पर पहुंच चुके हैं। ऐसी स्थिति कई अन्य महानगरों की भी है। इसको लेकर समय–समय पर माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा भी दिशा निर्देश जारी किये जाते रहे हैं। आज हम सब का उत्तरदायित्व है कि हम पर्यावरण संरक्षण को लेकर संवेदनशील हों। ऐसी अपेक्षा विश्व के प्रमुख विकसित तथा विकासशील देशों से की जाती है।

सन्दर्भ सूचीः

- पी.जे. काम्पबेल, **एन इन्ट्रोडक्शन टू ग्लोबल पॉलिटिक्स**, ब्लैकवैल पब्लिकेशन, लन्दन, 2010.
- पुष्पेश पन्त, **21वीं शताब्दी में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध,** मैकग्राहिल्स, लन्दन, 2012.
- अनीक चटर्जी, **वर्ल्ड पॉलिटिक्स**, पीयरसन ऐजुकेशन, दिल्ली, 2012.
- अरिवन्द कुमार, ''रियो+20, अर्थ सम्मिट इन प्रैस्पैक्टिव'', **थर्ड कॉन्सेप्ट,** वॉल्यूम 26, नं0 305, जुलाई 2012.
- अरूणोदय वॉजपेयी, ''जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति और भारत'', **वर्ल्ड फोकस,** अंक 33, दिसम्बर 2014.

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

- पी.सी.जोशी व प्रशान्त खत्री, ''भारत और जलवायु परिवर्तन वार्ताऐं'' **वर्ल्ड फोकस,** अंक 33, दिसम्बर 2014.
- *https://hindi.oneindia.com › **समाचार** › **देश**.*
- *hindi.indiawaterportal.org/node/32661.*
- *hindi.indiawaterportal.org/**पर्यावरण**-**प्रदूषण**-environmental-...*
- https://en.wikipedia.org/wiki/Environmental_governance
- *https://www.artofliving.org/in-hi/project/environmental-care*